मध्यस्थ दर्शन आधारित योजना (लेख संकलन)

- ए नागराज

मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद सहज योजनाएं तीन हैं:

१) जीवन विद्या (लोकव्यापीकरण) योजना

- यह जीवन, जागृति क्रम तथा जीवन के कार्यक्रम को सर्वसुलभ करने के अर्थ में है |
- इससे स्वयं के प्रति विश्वास, श्रेष्ठता का सम्मान तथा प्रतिभा का उदय होता है

२) शिक्षा का मानवीयकरण योजना

- यह मानव में मानवीयतापूर्ण जीवन अर्थात मानवीय दृष्टि, विषय तथा स्वभाव में गुणात्मक परिवर्तन के लक्ष्य से है |
- इससे व्यवहार में सामाजिक तथा व्यवसाय में स्वावलंबी होना होता है |

३) परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य व्यवस्था योजना

- परिवार ही व्यवस्था का आधार है, न की शासन या ईश्वरीय कृपा
- इससे न्याय सुलभता, उत्पादन सुलभता, विनिमय सुलभता से अखंडता सार्वभौमता मानव कुल में प्रमाणित होता है

१) जीवन विद्या योजना

अस्तित्व में जीवन विद्या का स्वरुप, जीवन - जाग्रति लक्षित अभ्यास की परिस्थिति, स्थिति व गति, आवश्यकता, सम्भावना, प्रक्रिया, स्रोत एवं प्रयोजनपूर्वक है!

परिस्थितियां :- अस्तित्व में हमें जीवन जागृति लक्ष्य के लिए निम्नलिखित परिस्थितियां बाध्य कर रही हैं!

(१) विभिन्न अभ्यास परंपरा स्वयं तथा उनकी परस्परता अंतर्विरोध होना!

(२) मनुष्य के अनुभव बल, विचार शैली तथा जीवन कला में अंतर्विरोध होना!

(३) ध्यान, ध्येय व ध्याता में अंतर्विरोध होना!

(४) दृष्टा, दृश्य व दर्शन में अंतर्विरोध होना!

(५) अभ्यास, उसका परिणाम, फल एवं प्रभाव का शिक्षा व व्यवस्था से सूत्रित व व्याख्यायित न होना!

उपर्युक्त सभी परिस्थितियां विकल्प के लिए प्रेरक हैं-

सूत्र - प्रत्येक मनुष्य शुभ चाहता है, रूचि से ग्रसित रहता है

स्थिति व गति :- अस्तित्व में जीवन जाग्रति ..... मनुष्य में, से, के लिए सहज स्थिति व गति है!

जीवन विद्या = जीवन जागृति = अस्तित्व में अनुभूति= प्रखर प्रज्ञा = प्रामाणिकता=जानना + मानना = स्थिति समाधान = संबंधों को पहचानना + निर्वाह करना = गति प्रामाणिकता (जानने व मानने) में, से, के लिए सम्पूर्ण व

अस्तित्व, अस्तित्व में विकास, अस्तित्व में जीव, अस्तित्व में जीवन जागृति तथा अस्तित्व में रचनाएँ, समाधान में, से, के लिए सम्पूर्ण गति के लिए क्षेत्र मानवीय तथा नैसर्गिक संबंधों को पहचानना और मूल्यों का निर्वाह करना ही है! प्रत्येक मनुष्य कर्म-स्वतंत्रता व कल्पना शीलता जैसी मौलिक वैभव सहित स्थिति व गति में दृष्टव्य है! यही मौलिकता बहु-आयामों में प्रवर्तन का स्रोत होना सर्वेक्षण पूर्वक सम्पूर्ण देश काल में स्पष्ट होता है! बहु आयामी प्रवर्तन क्रम में, कर्म व कल्पना की तृप्ति बिन्दुओं का

अन्वेषण समाहित है! ऐसी तृप्ति बिन्दुओं का स्वरुप प्रामाणिकता व समाधान जो स्वयं जीवन जागृति की अभिव्यक्तियाँ हैं! अस्तु जीवन जागृति ही अभ्यास का सार्वभौम उद्देश्य है!

सूत्र:- जीवन में जागृति, नियति-क्रम व्यवस्था है इसलिए उसकी पीड़ा नियति सहज है, यही नित्य संभावना है!

आवश्यकता :- अस्तित्व में जीवन जागृति का साक्ष्य एक सार्वभौम आवश्यकता है!

मानव में, से, के लिए -

(१) समाधान, समृद्धि, अभय व सह-अस्तित्व की आवश्यकता है!

(२) प्रामाणिकता व प्रमाण की आवश्यकता है!

(३) जीवन- जागृति की आवश्यकता है!

(४) अनुभव बल, विचार शैली व जीने की कला में सामरस्यता की आवश्यकता है!

(५) ध्यान, ध्येय व ध्याता में सामरस्यात्मक स्थिति व गति की आवश्यकता है!

(६) दृष्टा, दृश्य व दर्शन में निर्भरमता की आवश्यकता है!

(७) अभ्यास, व्यवस्था व शिक्षा में सामरस्यता की आवश्यकता है!

(८) शिक्षा व्यवस्था व आचरण में सामरस्यता की आवश्यकता है!

(९) अस्तित्व और अस्तित्व में जड़ चैतन्यात्मक प्रकृति का अन्तर्सम्बन्धों के प्रति निर्भय होना आवस्यक है!

इस प्रकार साम्य रूप में अभ्यास की सार्वभौम आवश्यकता स्पष्ट है!

सूत्र:- जीवन तृप्ति व व्यवहार की सार्वभौम आवश्यकता स्पष्ट है!

संभावना :-

(१) अस्तित्व में जीवन जाग्रति की संभावना सहज है!

(२) प्रत्येक मनुष्य में जीवन - जागृति, तृप्ति (प्रामाणिकता) व समाधान की संभावना के रूप में ही विद्यमान है!

(३) प्रत्येक मनुष्य में जीवन - जागृति विश्राम की संभावना के रूप में विद्यमान है!

(४) प्रत्येक मनुष्य में जीवन जागृति सार्वभौम व्यवस्था की सम्भावना के रूप में विद्यमान है!

(५) प्रत्येक, मनुष्य में जीवन, जागृति, स्वतंत्रता व स्वराज की सम्भावना के रूप में विद्यमान है!

जीवन जागृति की सम्पूर्ण संभावनाओं का आधार अस्तित्व है एवं अस्तित्व में मानव ही है! मानव सर्वाधिक विकसित प्रकृति है! इसकी मौलिकता कर्म, स्वतंत्रता और कल्पनाशीलता के रूप में स्पष्ट है! ऐसी मौलिक स्थिति व गति सहज रूप में क्रमशः अप्राप्ति की प्राप्ति, अज्ञात का ज्ञात संपन्न होने में है फलतः

कौन अज्ञात को ज्ञात और अप्राप्त को प्राप्त करना! मैं कौन हूँ? क्या हूँ? कैसा हूँ? तथा मैं का उदगार बिंदु कहाँ है?

यदि जीव और जगत विकास है, तब इनका मूल स्वरुप, लक्ष्य एवं प्रयोजन क्या है? यदि जीव और जगत किसी की इच्छा, संकल्प, प्रभाव, अनुग्रह या प्रसाद हो तब वह क्या है?

इस प्रकार अनेकानेक प्रश्नों का मानस पाताल पर उभरना, मनुष्य की मौलिकता ही है! इसके अतिरिक्त और भी प्रश्न उभर सकते हैं, उन सबका निराकरण अथवा समाधान की नित्य संभावना जीवन-जागृति क्रम में है!

२) शिक्षा का मानवीयकरण योजना

इस योजना का उद्देश्य शिक्षा का मानवीयकरण करना है , शिक्षा को मानवीयकरण करने के लिए प्रेरित परिस्थितियां, स्थिति आवस्यकता एवं उसकी सम्भावना व स्रोत को विवेचित किया गया है तथा उसका संक्षिप्त स्वरुप प्रस्तावित है !

परिस्थिति –

शिक्षा को मानवीयकरण करने के लिए प्रेरित परिस्थितियां निम्न हैं -

1. वर्तमान शिक्षा का यांत्रिक होना एवं उसके क्रम में मनुष्य के लिए शिक्षा का स्पष्ट न होना !.
2. प्रचार प्रशार व प्रदर्शन के द्वारा अपराध और श्रृंगारिकता को सामान्य जन मानस तक पहुँचान का प्रयास करना !
3. व्यवस्था तंत्र का गद्य व प्रलोभन पर आधारित होन!
4. मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक आचरणों में अंतर्विरोध होना, फलतः औसत मनुष्य का निश्चित स्वरुप न होना !

उपयुक्त यथा-स्थिति के फलस्वरूप प्रबुद्धता में विस्वास रखने वाले प्रत्येक मनुष्य इन परिस्थितियों से उबरना चाहता है जिसके लिए विकल्प की आवस्यकता उत्पन्न हो चुकी है इस मुद्दे पर लोक मानस, प्रबुद्ध जन-मानस, राष्ट्र मानस, शिक्षा-मानस एवं व्यवस्था मानस का सर्वेक्षण किया गया है और किया जा सकता है जिससे यह स्पष्ट हुआ कि इन सब परिस्थितियों के मूल में भौतिक व अधिभौतिक वादों के बीच अंतर्विरोध ही प्रधान कारण है, क्योंकि अधिभौतिकवाद के अनुसार चेतना व पदार्थ तथा भौतिकवाद के अनुसार पदार्थ, संरचना का कर्मशः उत्पन्न व निष्पन्न होता है, जोकि न तो प्रमाणित है और न ही वर्तमान!

स्थिति-

शिक्षा को मानवीयकरण करने के लिए प्रेरित स्थितियां निम्न हैं -

1. परिस्थिति में व्यवस्था ही सार्वभौम लक्ष्य कर्तव्य व दायित्व स्थिति व गति है!

2 स्थिति में अस्तित्व ही सम्पूर्ण भाव व्यवस्था है!

3. अधि स्थिति में अस्तित्व ही विकास व्यवस्था है!

4. स्थिति में अस्तित्व ही जीवन व्यवस्था है!

5. स्थिति में अस्तित्व ही जीवन जागृत व्यवस्था है!

6. स्थिति में अस्तित्व ही सम्पूर्ण रचनायें हैं!

7. व्यवस्था में जाग्रति क्रम ही शिष्टता है, व्यवस्था में जीने कि कला, विचार-शैली व अनुभव / बल की अभिव्यक्ति व सम्प्रेक्षण का वर्तमान स्वरुप शिक्षक है!

व्यवस्था - अनुभव में प्रमाणिकता > जानना + मानना

बौद्धिकता में समाधान > संबंधों की पहचान व मूल्यों का निर्वाह

विवेचना में विभव > वर्तमान में विश्वास व भविष्य में विश्वास की पूर्ण संभावना

विश्लेषण में सह-अस्तित्व > पूरकता + उद्यंतिकार

आवश्यकता -

शिक्षा को मानवीयकरण करने के लिए प्रेरित आवश्यकताएं निम्न हैं-

1. प्रत्येक मनुष्य में पाई जाने वाली कल्पनाशीलता व कर्म स्वतंत्रता एवं अस्तित्व को अनजाने में स्वीकारता ही है, इसलिए प्रत्येक विद्यार्थी (व्यक्ति) का सम्पूर्ण अस्तित्व के प्रति निर्मल होना एक आवश्यकता है!

2. मनुष्य जिन-जिन संबंधों में प्रधानतः विश्वास को निर्वाह कर पाता है, उन्हीं संबंधों की परस्परता में वह अपनी उपयोगिता व प्रयोजनीयता को आंकलित कर पाता है! इसी तथ्य के आधार पर मनुष्य के लिए अखंड समाज के अर्थ में संबंधों को पहचानना व मूल्यों का निर्वाह करना एक अनिवार्य स्थिति है! अस्तु मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक व्यक्तित्व के लिए बौद्धिक समाधान और भौतिक समृद्धि एक आवश्यकता है!

३. प्रत्येक मनुष्य में आकांक्षा उसकी स्वतंत्रता व स्वराज्य के रूप में विद्यमान है, जिसे बहुआयामी, अभिव्यक्तिशील मानव में सफल बनाने के लिए सम्पूर्ण आयामों के सामंजश्य सूत्र के प्रति जाग्रत होना एक आवश्यकता है!

४. प्रत्येक मनुष्य जन्म से न्याय का याचक है; सही करना चाहता है; सत्यवक्ता है; इसलिए विद्यार्थी (व्यक्ति) में कर्मश: न्याय पदार्थ क्षमता, सही कार्य करने की योग्यता व यथावत, परंपरा को बनाये रखने की पात्रता का जागृत होना एक आवश्यकता है!

संभावना -

शिक्षा को मानवीयकरण करने के लिए प्रेरित संभावनाएं निम्न हैं-

१. मनुष्य की समस्त अनुभूतियाँ उसके जाग्रति से सूचित है, जिसकी अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा व प्रकाशन का प्रयोजन व्यवस्था की भागीदारी में ही प्रमाणित होता है क्योंकि इष्ट व्यवस्थ ही है न कि अव्यवस्था ! अस्तु जाग्रति स्व-संस्कार बल और वातावरण के योगफल में शिक्षा के मानवीयकरण पूर्वक सफल होने कि पूर्ण सम्भावना है!

२. मनुष्य की कल्पनाशीलता व कर्म-स्वतंत्रता कर्मशः समाधान व प्रामाणित में तृप्त होती हुई पाई जाती है, मनुष्य अपनी मौलिकता सहित विकास क्रम में सुख की अभीप्सा से विभिन्न परस्परताओं में क्रियाशील पाया जाता है! ये परस्परताएँ मनुष्य, मनुष्य व मनुष्य - नैसर्गिक संबंधों के रूप में प्रसिद्ध हैं, जिन्हें मनुष्य जीवन सहज रूप से पहचान व निर्वाह कर तृप्त होता है, अस्तु जीवन-तृप्ति, विचार-तृप्ति एवं व्यव्हार तृप्ति के योगफल में शिक्षा के मानवीयकरणपूर्वक सफल होने की पूर्ण सम्भावना है !

३. मनुष्य जागृतिपूर्वक अस्तित्व समग्र को सह-अस्तित्व अविभाज्य एवं नित्य अनुभव करता है! फलतः समाज की अखंडता का अर्थ समाधान, समृद्धि, अभय तथा सह-अस्तित्व के अविभाज्य स्वरुप की निरंतरता ही है! जिसका स्वरुप एक मनुष्य में आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने योग्य क्षमता तथा वस्तु की सदुपयोगिता ही है! अस्तु अस्तित्व में स्पष्ट पूरकता व उद्वात्तिकरण सिद्धांतों के योगफल में शिक्षा के मानवीयकरणपूर्वक सफल होने की पूर्ण सम्भावना है!

४. मनुष्य व्यवस्थापूर्वक शुभाकांक्षी है! शुभ, न्याय सुलभ व विनिमय सुलभता के संयुक्त स्वरुप को क्रियाशीलता केंद्र में ख्यात है! न्याय, संबंधों के निर्वाहपूर्वक तथा विनिमय श्रम नियोजनपूर्वक है! अस्तु, व्यवहार व व्यवसाय के योग में शिक्षा के मानवीयकरणपूर्वक सफल होने की पूर्ण सम्भावना है!

स्रोत :-

अस्तित्व में विकास, जीवन, जीवन-जागृति और रचनायें नित्य वर्तमान हैं! विकास, परमाणु ही इतिहास है! परमाणु में विकास होना पाया जाता है इसलिए जीवन-जागृति, नियति क्रम की अभीत्सा है! नियति-क्रम में दो ही लक्ष्य स्पष्ट हुए हैं; - विकास और जीवन-जागृति ! शरीर रचनाएँ और जीवन संयुक्त रूप में जागृति क्रम में जीवावस्था से आरम्भ होकर मानव जो अपनी प्रामाणिकता के पद में जागृति का अनुभव करता है! मानव, अस्तित्व में, जड़- चैतन्य प्रकृति के संयुक्त साकार रूप में मिलता है! रचनाओं में शरीर रचना श्रेष्ठ है, उससे भी मनुष्य-शरीर रचना सर्वाधिक विकसित है! शरीर के द्वारा जीवन के प्रकाशित होने के क्रम में शरीर में जीवंतता नियति सहज है! इसी क्रम में जीवन तृप्ति कामनाओं का शरीर व्यापार से सम्बंधित

होने की स्थिति में मनुष्य को रुचिशील देखा जाता है! जब मनुष्य रुचिशील होता है तब जीवन तृप्तियों के स्रोतों से अछूता रह जाता है! क्योंकि शरीर को ही जीवन मानने लगता है! रुचियों से घनीभूत हो जाता है! इन भ्रमित धारणाओं का समुचित निराकरण का स्रोत मूल्य-मूलक एवं लक्ष्य-मूलक प्रणालियों के रूप में नित्य समीचीन है! प्रत्येक मनुष्य जीवन तृप्ति की कामना से संपन्न है! जीवन तृप्ति प्रामाणिकता और समाधान है! जीवन तृप्ति जीवन जागृति का साक्ष्य है! इसलिए जीवन-जागृति स्रोत के रूप में अस्तित्व में है ही! इसलिए अस्तित्व ही स्रोत है!

प्रत्येक मनुष्य में अव्यवस्था की समझ, पीड़ा के रूप में होना पाया जाता है! ऐसी अव्यवस्था का बोध, विकसित प्रकृति का, अविकसित प्रकृति के सदृश्य कार्य व्यवहार विन्यास से होता है! अस्तित्व स्वयं व्यवस्था का स्वरुप होने के कारण उसमें प्रत्येक इकाई का किसी न किसी पद में होता ही है! वह उसी पद में अपने "त्व" सहित व्यवस्था को स्पष्ट करता हुआ पाया जाता है! जैसे लोहा-लोहत्व के साथ; दूब-दुबत्व के साथ; गाय - गायत्व के साथ; मानव मानवत्व के साथ व्यवस्था होना! अस्तित्व सहज सत्य है! मानवत्व स्वयं समाधान, समृद्धि, अभय व सह-अस्तित्व की अविभाज्य अभिव्यक्ति ही है जो नियति सहज स्रोत है! उक्त प्रकार के सम्पूर्ण स्रोत को वांगमय रूप में अवतरित करने पर मध्यस्त दर्शन, "सह अस्तित्ववाद" मानव को सहज सुलभ हुआ है! जिसके प्रणेता श्री ए. नागराज भजनाश्रम, नर्मदांचल, अमरकंटक हैं!

संक्षिप्त स्वरूप :- शिक्षा का मानवीयकरण शिक्षित व्यक्ति में मानवीय मूल्य, चरित्र, नैतिकता की अविभाज्य अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा और प्रकाशन के रूप में है! जिसके धारक वाहकता का दायित्व, प्राथमिक रूप से शिक्षक को है! शिक्षक, शिक्षा के स्वरूप में जीते हुए शिक्षा प्रदान करने के अर्थ में शिक्षा का मानवीयकरण करना अभिदिसत है!

शिक्षा में व्यवसाय शिक्षा के साथ व्यवहार शिक्षा को प्रावधानित करना एक आवश्यकता है! व्यवहार शिक्षा, मानव सम्बन्ध को पहचान और उसके निर्वाह के लिए है तथा व्यवसाय शिक्षा उत्पादन कार्यों में परीक्षण विधि के विकास के लिए है!

शिक्षा में व्यक्तित्व व प्रतिभा का संतुलित उदय होने की पद्धति को विकसित करना एक आवश्यकता है! शिक्षा में विवेक व विज्ञान सम्मत प्रणाली को अपनाना भी एक आवश्यकता है!

अध्ययन की सम्पूर्ण वस्तु - अस्तित्व, विकास, जीवन, जीवन जागृति, रचना

शिक्षा में वस्तु का स्वरूप :-

(१) जीवन विद्या

(२) वस्तु-विद्या

जीवन विद्या : प्रत्येक मनुष्य में पाई जाने वाली आशा, विचार, इच्छा, संकल्प व अनुभव जैसी अक्षय शक्तियों का अद्ययन है! इसके लिए स्रोत जीवन ही है! जीवन एक विकास पूर्ण परमाणु है! परमाणु का गठन पूर्ण स्थिति में होना नियति क्रम में होने वाली एक अद्भुत घटना है! ऐसे जीवन में उक्त पांचों शक्तियों का प्रत्येक मनुष्य में जीवंतता पूर्वक प्रभावशील, कार्यशील एवं व्यवहारशील होना पाया जाता है! यही प्रत्येक मनुष्य के आचरण के मूल का सूत्र और व्याख्या का स्वरूप है!

- अनुभव (जागृति) पूर्वक ही प्रत्येक मनुष्य व्यवस्था को पहचानता है! व्यवस्था वर्तमान में विस्वास एवं भविष्य में विश्वास की पूर्ण सम्भावना है!

- वर्तमान में विश्वास ही चरित्र (मानवीय आचरण) की क्रियान्वयन गति है!

- विश्वासपूर्ण कार्य योजना आश्वासन पूर्ण योजनाओं का रहना प्रत्येक मनुष्य की अभीत्सा है!, यही कार्यकर्म का आधार है!

वस्तु के रूप में जीवन-विद्या व वस्तु-विद्या !

जीवन विद्या व वस्तु विद्या का क्रियान्वयन स्वरूप :-

- विज्ञान के साथ चैतन्य पक्ष का अध्ययन

- मनोविज्ञान के साथ संस्कार पक्ष का अध्ययन

- दर्शन शास्त्र के साथ प्राकृतिक एवं वैकृतिक ऐश्वर्य के सदुपयोग एवं सुरक्षात्मक नीति पक्ष का अध्ययन

- राज्यनीति शास्त्र के साथ मानवीयता का संरक्षण व संवर्धनात्मक, नीति पक्ष का अध्ययन

- समाजशास्त्र के साथ मानव संस्कृति, सभ्यता, विधि व्यवस्था में सामरस्यात्मक नीति पक्ष का अध्ययन

- साहित्य के साथ तात्विक पक्ष का अध्ययन

पद्धति का स्वरूप - प्रतिभा व व्यक्तित्व का संतुलित उदय !

प्रणाली का स्वरूप - विवेक व विज्ञान सम्मत शैली (प्रणाली)!

नैतिकता का स्वरूप - व्यवहार में सामाजिक व व्यवसाय में स्वावलम्बी !

उक्त सभी स्वरूपों का प्रधान लक्ष्य अस्तित्व में जागृति-पूर्वक अनुभव करने योग्य एक मात्र इकाई को सफल बना देना ही है! यही शिक्षा का प्रधान कर्त्तव्य है! जागृति क्रम में प्रवर्तन का यही तात्पर्य है!

क्रिया कलाप - विश्लेषण स्वयं तर्क अवश्य होते हैं ये तात्विकता के बिना ध्रुवीकृत नहीं होते हैं! इसलिए वर्तमान विज्ञान मानस, मानव के लिए अपूर्ण सिद्ध हो चूका है! विवेक का कार्यकलाप विवेचनात्मक होता है! विवेचनाएं तात्विकता की सम्पूर्णता को सूत्रित एवं व्याख्यायित करती हैं! इसी तथ्य-वश विज्ञान का विवेक सम्मत होना एक अनिवार्यता है!

शिक्षा के मानवीयकरण का प्रयोजन :-

- शिक्षा विद्यार्थी एवं शिक्षक में सामरस्यता स्थापित करना!

- व्यक्ति में स्वयं के प्रति विश्वास और श्रेष्ठता के प्रति सम्मान स्थापित करना!

- व्यक्ति के व्यवहार में सामाजिकता तथा व्यवसाय में स्वावलम्बन योग्यता को स्थापित करना!

- व्यक्ति में विनिमय तथा न्याय सुलभतापूर्वक स्वराज्य एवं स्वतंत्रता को अनुभव करने योग्य क्षमता को स्थापित करना!

- ए. नागराज शर्मा, प्रणेता-मध्यस्थ दर्शन

३) परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य व्यवस्था

(स्रोत: परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य व्यवस्था पुस्तिका संस: १९८५)

(अगला पृष्ठ देखें)

अध्याय-३

ग्राम स्वराज्य व्यवस्था की अवधारणा

"अखण्ड समाज का आधार ग्राम स्वराज्य है।"

ग्राम स्वराज्य की मूलभूत इकाई परिवार है। परिवार स्वयं मानवीयता पूर्ण व्यवस्था है। मानवीयता स्वयं स्वराज्य एवं स्वतंत्रता का स्वरुप है। स्वराज्य का तात्पर्य न्याय-सुलभता, उत्पादन-सुलभता और विनिमय-सुलभता मिल जाने से है। स्वतंत्रता का तात्पर्य प्रत्येक मनुष्य का स्वानुशासन सहज प्रमाणिकता और समाधान पूर्वक अभिव्यक्त, संप्रेषित व प्रकाशित होने से है. जो अस्तित्व रूपी सत्य को जानने व मानने से है अर्थात अस्तित्व में परस्पर संबंधों व मूल्यों को पहिचानने व निर्वाह करने से है।

"अस्तित्व में प्रत्येक मनुष्य" मानवत्व सहित व्यवस्था है। "और समाज व्यवस्था में भागीदार है।" इसका प्रत्यक्ष रूप स्वतंत्रता के रूप में स्वयं में व्यवस्था और स्वराज्य के रूप में, समग्रता के साथ भागीदारी है। समग्रता के साथ व्यवस्था की भागीदारी, एक से अधिक व्यक्तियों के साथ ही संभव है। इस लिए सहज रूप में जो एक से अधिक व्यक्तियों की सम्मिलित अभिव्यक्ति है, वह परिवार ही है। ऐसे परिवार में मानवीयता पूर्ण आचरण, व्यवहार सहित परस्पर बौद्धिक समाधान और भौतिक समृद्धि सुलभ होने की स्थिति में ही, ग्राम-स्वराज्य, सहज सुलभ होगा जो अखंड समाज का आधार है।

परिवार और मानव कुल में न्याय सुलभता का तात्पर्य मानव व नैसर्गिक संबंधों की पहचान व उसमें निहित मूल्यों का निर्वाह ही है।

"मानव परंपरा में स्वायत्तता का स्वरुप स्थिति में स्वतंत्रता (स्वानुशासन) व गति में स्वराज्य है।"

उत्पादन सुलभता का तात्पर्य परिवार के प्रत्येक सदस्य को वयस्क होने तक व्यवसाय में स्वावलम्बी बनाने से है। परिवार के सब वयस्क मिलकर, परिवार की आवश्यकता से अधिक उत्पादन कर सकें।

मानवीयता की सीमा में उत्पादन का तात्पर्य प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन द्वारा, उसके साथ पूरकता विधि से, बिना क्षति के सामान्याकांक्षी (आहार, आवास, अलंकार) व महत्वाकांक्षी (दूर-श्रवण, दूर दर्शन, दूर-गमन) सम्बन्धी वस्तुओं के निर्माण से है। परिवार में भौतिक समृद्धि के लिए इससे अधिक की आवश्यकता नहीं है, न इससे कम में भौतिक समृद्धि होती है।

"विनिमय सुलभता" का तात्पर्य, परिवार द्वारा उत्पादित वस्तुओं को श्रम मूल्य के आधार पर, दूसरे परिवारों के साथ, लाभ हानि मुक्त, आदान-प्रदान से है, ताकि हर परिवार को भौतिक समृद्धि का अनुभव हो सके। इस व्यवस्था में लाभोन्मादी व्यापारीकरण का कोई स्थान नहीं है। सम्पूर्ण विनिमय-व्यवस्था का अर्थ प्रत्येक परिवार द्वारा किए गए श्रम नियोजन को, अन्य परिवारों में श्रम मूल्य के आधार पर आदान-प्रदान करने से है। इसके अनुसार ग्राम के विनिमय कोष द्वारा, प्रत्येक परिवार की आवश्यकता से अधिक उत्पादन को, बाह्य बाजारों में विक्रय कर, वहाँ से गांव के

लिए आवश्यक वस्तुओं को क्रय कर, ग्राम वासियों को उपलब्ध कराया जाएगा। ऐसी व्यवस्था, क्रम से ग्राम समूह, क्षेत्र मण्डल, मंडल समूह, मुख्य राज्य, प्रधान राज्य और सम्पूर्ण राज्य तक जुड़ी रहेगी।

ग्राम स्वराज्य सहज सुलभ होने के उपरान्त ही प्रत्येक मनुष्य को, अस्तित्व समग्र व्यवस्था के साथ भागीदार होने और स्वयं मानवीयता सहित पूर्ण व्यवस्था के रुप में व्यस्त होने की संभावना सुलभ हो जाती है। यही जीवन जागृति का साक्ष्य है जो मानव परंपरा की चिरकाल से वांछा रही है। जीवन जागृति ही मानव में सहज रुप में, सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ और सार्थकता को प्रतिपादित करती है क्योंकि प्रामाणिकता और समाधान ही, मानव परंपरा में सार्वभौम अभिव्यक्ति है।

"जीवन जागृति ही स्वयं अभिव्यक्ति में प्रामाणिकता, संप्रेषणा में समाधान और प्रकाशन में स्वतंत्रता तथा स्वराज्य है। यही प्रत्येक–व्यक्ति की अपने में व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी का प्रमाण है।" यही अखंड मानव समाज का सूत्र और स्वरुप है।

"अखंड सामाजिक में पारंगत बनने और बनाने की क्रिया प्रबुद्धता, उसका आचरण, संप्रभुता और उसकी निरंतरता क्रम में संरक्षण व संवर्धन पूर्वक आचरण करने व कराने का कार्य, प्रभुसत्ता है।"

यही मानवीय संविधान का सूत्र है। ग्राम स्वराज्य का अंतिम लक्ष्य, अखंड सामाजिकता की स्थापना करना है, जिससे

समाज में प्रत्येक मनुष्य को बौद्धिक समाधान व, भौतिक समृद्धि, अभयता व "सह–अस्तित्व" सार्वभौम रुप से सहज सुलभ हो सके।

"परिवार केन्द्रित ग्राम स्वराज्य का अनुभव करना व कराना, इस योजना का मुख्य उद्देश्य है।" गांव के प्रत्येक परिवार में, प्रत्येक सदस्य, मानवीयता पूर्ण आचरण करेगा। प्रत्येक मनुष्य मानव व नैसर्गिक सम्बन्धों व उनमें निहित मूल्यों की पहचान व निर्वाह करेंगे। भौतिक समृद्धि को प्राप्त करेंगे। (आवश्यकता से अधिक उत्पादन) और बौद्धिक समाधान को व्यक्त, संप्रेषित व प्रकाशित करेंगे। ऐसी अर्हता को सुलभ करा देना, ग्राम स्वराज्य है। "ग्राम स्वराज्य योजना" का आधार, व्यापारी करण व नौकरी की मानसिकता के स्थान पर उत्पादन सहित, उपयोगितावादी दृष्टिकोण को विकसित कर उसको व्यवस्था के रुप में क्रियान्वयन करना है, यही हमारी अवधारणा और प्रतिबद्धता है।